सत्य एँव अर्थ पूर्ण जीवन की खोज करने वालों के लिए

मृत्युंजय ख्रिस्त

लैमेन इवैंजलिक्ल फैलोशिप, (LEF,Chennai)

मई-जून, 2006

कांटों का ताज

'चाहे वे खोदकर अधोलोक में घुस जाएं, वहां से भी मेरा हाथ खींच लाएगा, और चाहे वे आकाश पर चढ जाएं, वहां से मैं उन्हें उतार लाऊंगा। (आमोस ९:२)'

परमेश्वर इस्राएलियों से बात कर रहा है। उन में से कुछ लोगों ने यह सोचा कि वे परमेश्वर की पहुंच से भाग निकल सकते हैं। मगर परमेश्वर कहते है कि वे उनसे नही भाग पायेंगे। नवजवान लोग यह भूल जाते है कि परमेश्वर उन्हे देख रहा है। उन्हे तलाश कर रहा है ताकि वह उन्हे आशीष दें। वह किसी तरह से उन्हे आशीष देना चाह रहे हैं? वह उन्हे अपना स्वभाव देना चाह रहे हैं। मगर परमेश्वर से जीवित संपर्क में आने से लोग डरते हैं। पुराने नियम के समय में, जब लोग दूसरे देवी-देवताओ की आराधना कर रहे थे, उन्होंने कहा, 'पहले प्रभु की खोज करो।' तब उन्हें व्यवस्था दी गई। मूसा के द्वारा लोगों को व्यवस्था देने के बाद परमेश्वर ने उन्हें सिखाया 'पहले परमेश्वर के राज्य की खोज करो' वे इन दोनों बातों को एक ही समय पर उनको नहीं सिखा पाये। तुम कैलक्यूलस नही सिखा पाओगे जब तक पहले बीज गणित सिखा ना लो। कैलक्यूलस समझने के लिए बीजगणित को समझना जरूरी है।

पृष्ठ २ पर..कांटों का ताज..

आत्मिक उन्नति के लिए देखना न भूलें

'परमेश्वर की चुनौती'

ETC TV कार्यक्रम

हर शनिवार सुबह ६:३० बजे

कलवरी पर परमेश्वर की करुणा और सच्चाई

'धार्मिकता और न्याय तेरे सिंहासन के आधार हैं, करुणा और सच्चाई तेरे आगे चलती है। क्या ही धन्य है वे जो आनन्द की ललकार को पहिचानते हैं। हे यहोवा, वे तेरे मुख के प्रकाश में चलते हैं। वे दिन भर तेरे नाम में आनन्दित रहते हैं, और तेरी धार्मिकता के द्वारा महिमान्वित किए जाते हैं।' भजन संहिता (३९:१४-१६) परमेश्वर न्यायी है। परमेश्वर का यह एक गुण है जो हम उपेक्षित करके नज़र अन्दाज करते है। वह किसी भी तरह की कर्कशता या बदले या प्रतिशोध से, किसी भी रूप में हमें प्रतिफल नहीं देता है। वह न्यायी है। और न्यायी रहने में वह अनुग्रह से भरा है।

'धार्मिकता और न्याय तेरे सिंहासन के आधार हैं।' परमेश्वर स्पष्ट रूप से अच्छाई और बुराई, धार्मिकता और अधर्म के बीच सीमांकन करता है। और जो उनके बच्चे है वे भी वैसा ही करेंगे। वे दुष्टता से समझौता नहीं करेंगे। उनमें सच्ची न्याय-भावना होगी। वे नही चाहेंगे की अन्याय और दबाव बना रहें। आज हम ऐसे कई लोगों को देखते है, जब दुष्टता या अन्याय या लोभ या घूसखोरी या भ्रष्टाचार से उनका सामना होता है तब अनजान बनकर अपनी नज़र फेर लेते है। नहीं, परमेश्वर स्पष्ट रूप से ऐसे लोगों पर दण्ड लाता है जिनका नैतिक मूल्यों के प्रति कोई आदर नहीं है। इसी कारण, हम कोई भी निर्जीव देवता रखने का साहस ना करें। अपने हाथों से किसी भी देवता को बनाकर, उसे रखने का साहस हम ना करें। किसी मूर्ति को बनाकर उसे परमेश्वर कहना का साहस हम ना करे।

परमेश्वर, पवित्र परमेश्वर है। परमेश्वर की पवित्रता मूल विषय है, और ऐसे लोग भी है जो यह भी नही जानते की परमेश्वर पवित्र है। ऐसे लोगों की गहराई नापी नही जा सकती। उनको सही दिशा का आभास नही होता। और उनको होगा भी नहीं। उनका दिशासूचक कम्पास गलत है। वे पूरी तरह से गुमराह है क्योंकि उनके मन में परमेश्वर नही है। जब यीशु मसीह हमारे हृदय में आते है, हम अपने चारों ओर न्याय देखना चाहेंगें - हमारे कानून के न्यायालयों में, हमारे न्यायाधीशों में, हमारे दण्डाधिकारों में, हमारी सड़कों पर और हमारे दफतरों में। हम किसी क मजोर व्यक्ति से अनुचित फायदा उठाना नही चाहेंगे। गरीबों को दबाया जाना देखना नही चाहेंगे। जब कोई किसी दूसरे को हानि पहूँचा रहा हो, यह देखकर, हम अनदेखा कर मुँह नहीं फिरेंगे।

आज हमारा आमना -सामना ऐसी परिस्थितियों से हो रहा है जहाँ लोग भागीदार बनना नही चाह रहे है। मगर दूसरी ओर एक मसीही धार्मिकता से, न्याय से, करुणा से, इन सब विषयों से जुड़ा है। बाइबल यह कहता है कि करुणा और सच्चाई (परमेश्वर की) उनके आगे चलती हैं। अगर परमेश्वर तुम्हारे साथ है और परमेश्वर तुम्हारा निर्देशन कर रहा है। तुम्हारे साथ भी ऐसा ही होगा।

करुणा, अहा, कितना आश्चर्यजनक! एक पापी के लिए करुणा। परमेश्वर को दुख देकर, उनके हृदय को तोड़ने वाले आदमी के लिए करुणा। परमेश्वर के हृदय को तोड़ने के जवाबदार आदमी के प्रति करुणा। कलवरी की करुणा - तुम्हारा और मेरा पाप है। सच्चाई कहती है, 'अब यह आदमी कम पड़ गया है। यह आदमी स्वर्ग केराज्य मे कभी भी प्रवेश नही कर सकता। यह आदमी सच्चाई - जो मेरा कानून है, उसके विरुद्ध गया है। इसलिए स्वर्ग में इस आदमी के लिए स्थान हो ही नहीं सकता।'

तब करुणा कहती है, 'हाँ, क्योंकि इस

पृष्ठ २ पर..करूणा और सच्चाई..

पृष्ठ १ से..करूणा और सच्चाई..

आदमी ने मान लिया है कि यीशु मसीह के क्रूस में उसके पापों की सजा का कार्य पूरा हुआ है। क्योंकि इस आदमी ने अपनी असलियत के बारे में स्वीकार किया है कि वह पापी है और परमेश्वर की महिमा से वंचित है, वह करुणा का पात्र है।' हमारा परमेश्वर कितना अद्‌भुत है। एक पापी के प्रति करुणा - मेरे और तुम्हारे लिए करुणा।

इसलिए हम अपने उद्धारकर्ता परमेश्वर में आनन्दित है। मरियम के गीत को याद करो, 'मेरा प्राण प्रभु की बड़ाई करता है, और मेरी आत्मा मेरे उद्धारकर्ता परमेश्वर में आनन्दित हुई है।' (लूका १:४६,४७) आज हमारे आनन्दित होने का क्या कारण है? तुम जानते हो कि सांसारिक उत्तेजनायें तेजी से बीत जातीं है। फलस्वरूप दुःख और पीड़ा को छोड़ जाती है। अपराध और लज्जा की भावना छोड़ जाती है। इस संसार की ज्यादातर खुशियाँ क्षणभंगुर और अल्पकालिक है। वे बीत जातीं है और एक कड़ुवे स्वाद को पीछे छोड़ जाती है। मगर एक आदमी जो उद्धारक प्रभु यीशु मसीह में आनन्दित है, उसकी खुशी स्थायी है। तुम जानते हो कि यह अनुभव की जा सकती है मगर उसके बारे में व्यख्या नही की जा सकती। इसलिए बेहतर है कि तुम यीशु मसीह को पाओ और इस आनन्द को अनुभव करो - ऐसी खुशियाँ जो सर्वदा रहने वालीं है, सुख जो परमेश्वर के दाहिना हाथ में है। ऐसा लगता है कि आज का धर्म, किसी भी कीमत पर और किसी को भी बलि चढाकर जहाँ तक हो सके शीघ्रता से सुख प्राप्त कर रहा है। चाहे शवों को लांघना पड़े, जिन्दगियों को तबाह करना पड़े, कौमार्य को कुचलना पड़े, तो भी सुख पाना चाहते है।

अब इस तरह का सुख, यह स्वार्थी सुख सिर्फ दोष और दुःख को ही ला सकता है। बीमारी, दुर्गति और मृत्यु की प्रतिक्रिया को ही ला सकता है। इधर हमें कहा गया है, 'तेरी धार्मिकता के द्वारा महिमान्वित किए जाते हैं।' जो परमेश्वर की धार्मिकता से प्यार करते है, उन्हे एक दाम चुकाना पड़ेगा। उन्हें भी जो धार्मिकता स्थापित कराने चाहें, कीमत चुकाने के लिए तैयार हों। और हमारी धार्मिकता को बनाये रखने के प्रयास में भी, अदा करने के लिए एक मूल्य है। प्रभु यीशु मसीह ने हम से कहा, 'तुम से घृणा करेंगे।' 'मेरे नाम के कारण सब तुम से घृणा करेंगे, परन्तु जो अन्त तक धीरज रखेगा उसी का उद्धार होगा।' (मत्ती १०:२२)

अब धार्मिकता के लिए एक मूल्य अदा करना पड़ेगा। लोग शायद तुम से घृणा करें, झूठी निन्दा करके संदेह से तुम्हें देखेंगे। मगर तुम धार्मिकता के द्वारा महिमान्वित किए जाओगे।'क्यों कि हम यीशु मसीह से भरे है, उन्होंने हमें परमेश्वर के पुत्र बनाकर अलग किया है। तुम्हें धार्मिकता का वस्त्र पहनाया गया है। प्रिय दोस्त, मेरा ये मतलब नही है कि यह एक सैद्धान्ति धार्मिकता है। बलकि मै एक प्रयोगात्मक धार्मिकता के बारे में जिक्र कर रहा हूँ। जब उस स्त्री ने जो बारह वर्ष से लहू बहने के रोग से पीड़ित थी, प्रभु यीशु को छुआ था, उनसे क्षमता निकली थी। तुम जानते हो कि सामर्थ उनसे निकली और वह स्त्री चंगी हो गयी। उसकी धार्मिकता एक स्वस्थ करने वाली धार्मिकता है। वह दोषी ठहरानेवाली धार्मिकता नही है, वह फरीसियों की धार्मिकता जैसी नहीं है, वह आशीष की एक नदी है - एक नदी जो धार्मिकता बहा लाती है।

- जोशुआ दानिय्येल

पृष्ठ १ से..कांटों का ताज..

अव्यवस्थित लोगों को व्यवस्था दी गयी थी। और वे नैतिक जन बन गये। 'मैं उनके जाति भाइयों में से तेरे समान एक नबी खड़ा करूंगा, और अपना वचन उसके मुंह में डालूंगा, और जो जो आज्ञांए मैं उसे दूंगा वही वह उनको कह सुनाएगा।' (व्यवस्थाविवरण १८:१८) यीशु के द्वारा वे एक आध्यात्मिक व्यवस्था को पाने वाले थे। जब मसीह आये, वह उनके लिए एक सच्चा जीवन लाये - उनकी अपनी जिंदगी। उन्ही में वाचा थी, 'और फिर मैं तुम्हें एक नया हृदय दूंगा और तुम्हारे भीतर एक नई आत्मा उत्पन्न करूंगा और तुम्हारी देह में से पत्थर का हृदय निकाल कर तुम्हें मांस का हृदय दूंगा।'(यहेजकेल३६:२६)

परमेश्वर को मूसा ने एक जलती हुई झाड़ी में देखा था। परमेश्वर को हम लहु-लूहान क्रूस पर देखते है। वे दोनों बहुत ही अलग है। वे परमेश्वर के दो अलग पहलू प्रस्तुत करते है। क्रूस परमेश्वर एक नया पहलू है। परमेश्वर को पुराने नियम के लोगों ने एक अनुशास्ता के रूप में देखे थे। यीशु के अलावा और कोई नही जो प्रेममय परमेश्वर को प्रकट कर पाये। ना तो एलिय्याह, न ही मूसा और न ही कोई नबी जो पुराने नियम के समय में थे, प्रेममय परमेश्वर के प्रतीक बन पाये।

मसीह में, करुणा और सच्चाई का आपस में मेल हुआ। (भजन संहिता ८५:१०) दाऊद परमेश्वर से आशीर्वादित है। उसने एक राजसी मुकुट पाया है। मगर यीशु कांटो और पीड़ा का मुकुट पहने हम पर प्रकट होता है। फिर भी वह राजाओं का राजा है। दुर्भाग्यवश मसीही, धर्म के विषय में कुछ ही दूर तक जाते है। वे परमेश्वर से आशीर्वाद पाना चाहते है। मगर परमेश्वर के लिए वे क्या करते है? कुछ भी नहीं।

अगर तुम्हारे बच्चों में से एक परमेश्वर की सेवा करना चाहे, तो तुम बहुत व्याकुल हो जाते हो। त्याग का भाव नही है। त्याग की बारी आये तो, तुम पीछे हट जाते हो। तुम अपने लिए स्वास्थ्य और खुशियाँ प्राप्त करने के लिए परमेश्वर की खोज करते हो। क्या परमेश्वर की खोज तभी

For More Details Please contact on any of the following Addresses.

ALLAHABAD : Beautiful Books, 194A, Old Mumford Ganj,Pin Code-211 002, Uttar Pradesh, Ph.0532-2642872.
BANSI : Eton English Medium School,Chitaunakothi,Siddharth Nagar Dt, Pin Code-272 153, Uttar Pradesh, ph.05545-255002
MUMBAI : Beautiful Books,Hotel Victoria, Ground Floor,SBS Marg,Near GPO, CST, Pin Code.400001, Ph.022-56334763/ 25008840
NOIDA(Delhi): Beautiful Books, Basement, Sharma Market, Atta, Sector-27, NOIDA, Uttar Pradesh Ph.09810776324.
GANGTOK : Beautiful Books, P.B.No.94,31A, National Highway, Below High Court, Sikkim, Pin Code.737101 Ph.03592-228733
SHILLONG : Beautiful Books, P.B.No.39, Nongrimbah Road, Laitumkarh,Pin Code.793003, 0364-2501355

कर रहे हो जब और भी बहुत सारी चीज़ों की सहूलीयत मिलती हो? या परमेश्वर को किसी भी कीमत पर खोज रहे हो? अगर सरकार तुम्हारे विरोध में जाने वाली हो, क्या तुम फिर भी परमेश्वर की खोज करोगे? या यह देखना चाहते हो कि शक्तिशाली परमेश्वर तुम्हारे लिए महान कार्य कर हैं। 'क्या तू अपने लिए बड़ी बड़ी बातों की खोज में है? उन्हें मत खोज।' (यिर्मयाह ४५:५)

परमेश्वर की खोज, प्रतिफल पाने के लिए मत करो। अगर अपने पड़ोसी के लिए तुम कांटों का मुकुट सहने को तैयार हो तो, यह सही बात है। अगर मसीह के लिए तुम्हें शर्मिन्दा होना पड़े और तुम तैयार हो तो यह सही बात है। प्रभु की अंतिम शिक्षा एक राजसी मुकुट नही, मगर कांटों का मुकुट है। मसीह के लिए क्या तुमने कुछ भी करने की इच्छा की है? जब तुम परमेश्वर की खोज पहले करोगे तो बाकी चीजे पीछे-पीछे आयेगीं। जो परमेश्वर की खोज करते है वे अपने लिये चीजों की तलाश नही करते। हम में से कुछ लोग जलती हुई झाड़ में परमेश्वर को ही देखे है। उन्हें हमने लहूलुहान क्रूस पर नही देखा है।

- (स्वर्गीय) एन. दानिय्येल

महान परमेश्वर पर ज़रा सा विश्वास

एक समुदाय में एक महिला थी। वह अपने सीधी सादे विश्वास के लिए जानी जाती थी। कई कठिनाइयों के बीच, वह बहुत शान्त रहती। एक दिन एक दूसरी औरत उस से मिलने आयी। उसने उस औरत के बारे में सुना था। मगर इस से पहले उस से कभी भी मिली नही थी। 'उसकी शान्त और खुशहाल जिन्दगी का क्या राज है', वह अपने मन में सोच रही थी।

जब उस औरत से मुलाकात हुई, तब उसने कहा 'तो आप ही वह महिला हैं जिसका विश्वास महान है। मैं आपके बारे में बहुत कुछ सुन चुकी हुँ।' 'नहीं', जवाब मिला। 'मैं महान विश्वास वाली औरत नही हूँ। मैं वो औरत हूँ जिसमें थोड़ा सा विश्वास है मगर महान परमेश्वर पर।'

- चुनीहुआ।

मृत्युंजय खिस्त

वापस करने की आवश्यकता

तुम ने अगर कभी भी बेईमानी से पैसे लिये हो और वापस नही किये हो - तुम्हें परमेश्वर से यह प्रर्थना करने की कोई जरूरत नही है कि वह तुझे माँफ करें और तुझे पवित्र आत्मा से भर दे। तब तक, जब तक तुमने उन पैसों को वापस न किया हो। अगर तुम्हारे पास वापस करने के लिए अभी पैसे नही है, मगर तुम वापस करना चाहते हो, परमेश्वर, वापस करने के लिए तैयार इच्छुक मन को स्वीकार करते है। कई लोग अन्धकार और अशान्ति में रह रहे हैं। क्यों कि इस विषय में वे परमेश्वर की मानने में असफल हैं। अगर तुम्हारा पश्चाताप सही है और हल गहराई में पहुँचा है, तो वह जरूर फल लायेगा। अगर मैंने किसी व्यक्ति के साथ गलत किया है या गलत तरीके से किसी से कुछ लिया है, जब तक मुझ में जक्कई की तर ह, उसे सही करने की चाह न हो-परमेश्वर के पास आने का क्या लाभ है? स्वीकार करना और वापस करना, माफ़ी पाने की ओर ले जाने वाली सीढियाँ है।

मेरा एक दोस्त था जो मसीह के पास आया था। वह अपने आप को और अपनी सारी संपत्ति परमेश्वर को समर्पित करने की कोशिश कर रहा था। वह पहले सरकार के साथ लेनदेन रखता था। और उसका गलत फायदा उठाया था। यह बात उसके मन में आयी और उसकी अन्तरात्मा उसे दोषी ठहराने लगी। वह कम पैसे सरकार को अदा करता था। अन्त मे उसने बाकी रकम का चेक निकाला और सरकार के कोषागार में भेज दिया। उसने मुझसे कहा कि ऐसा करने के बाद उसे बहुत आशीष मिली है। यही पश्चाताप के द्धारा फल लाना है। मुझे यह विश्वास है कि बहुत ही अधिक संख्या में आदमी, प्रकाश पाने के लिए परमेश्वर को पुकार रहे हैं। और अधिक्तर लोग उसे प्राप्त नहीं कर पा रहें हैं। क्योंकि वे ईमान्दार नहीं है।

एक आदमी हमारी सभाओं में आया था। वापस करने के विषय पर उस सभा में बातें हुई थी। एक बेईमान लेन-देन की याद उसके मन में कौंधी। तुरन्त उसे यह आभास हुआ था कि कैसे उसकी प्रार्थना का जवाब नही मिल रहा था। जैसे पवित्रशास्त्र कहता है , बिना जवाब प्रार्थना वापस उसकी गोद में लौट आयी, वह सभा छोड़ कर चला गया। सीधे वह रेलगाडी पकड़ कर एक दूर शहर में गया। वहाँ उसने बहुत साल पहले अपने मालिक के साथ कपट किया था। वह सीधा उस आदमी के पास गया। उसने उसके सामने अपनी गलती को मान लिया। और पैसा वापस करने का प्रस्ताव रखा। तब उसको एक और लेनदेन याद आया। वह अपने ऊपर आयी एक सही माँग को पूरा करने में वह असफल रहा था। उसने तुरन्त एक बहुत बड़ी रकम को वापस करने का इन्तजाम किया। वह दुबारा उस जगह पर आया जहाँ हम अपनी सभाओं का आयोजन कर रहे थे। परमेश्वर ने आश्चर्यजनक रीति से, उसके आत्मा में बहुत आशीष दी। बहुत समय से मेरी मुलाकात ऐसे आदमी से नही हुई है, जिनको ऐसी आशीष मिली हो।

जब मैं केनेड़ा में था, एक आदमी ने मुझ से कहा कि जब वह छोटा था, एक आदमी ने उसे गलती से एक सिक्का दिया था। केनेडा में वह दस शिलिंग कहलाता था। वह डालर के सिर्फ पौने भाग का होगा और सोने का था। उस लड़के को निर्धारित, चाँदी की शिलिंग देने के बजाय, उस आदमी ने उसे सोने का दस शिलिंग गलती से दे दिया। उस लडके ने उसको रख लिया। अगले दिन वह आदमी उस लडके ने पास लोटा और बोला, 'कल जब मैंने तुम्हे रेजगारी दी थी, क्या मैंने तुमको एक शिलिंग के सिक्के के बदले दस शिलिंग का सिक्का नहीं दिया? उस लड़के ने झूठ बोला, 'नहीं, साहब, आप ने नहीं दिया।'

४३ साल तक उस आदमी की अन्तरात्मा पर इस झूठ का बोझ था। आखिर में परमेश्वर के आत्मा का प्रभाव उस पर आया और वह मसीही बन गया। वह अब नही जानता था कि उस आदमी को कहाँ ढूंढे। इसलिए उसने ब्याज का अनुमान लगाया और सूद समेत मूल को एक आनाथालय में दे दिया। आखिर उसने इस झूठ को अपनी अन्तरात्मा से हटाया। अगर तुम्हारे अन्तरात्मा में कुछ है, उसे तुरन्त सीधा करो। अगर तुम्हारा मन किसी बीते लेन-देन पर जाता है जिस में तुमने अपने पडोसी के साथ छल किया है, तुरन्त उसे हर एक पैसा वापस करो।

- डि.एल.मूडी

सत्य की परख!

'इसलिए तुम परस्पर अपने पापों को मान लो और एक दूसरे के लिए प्रार्थना करो, जिससे कि चंगाई प्राप्त हो। धर्मी जन की प्रभावशाली प्रार्थना से बहुत कुछ हो सकता है।' याकूब (५:१६)

उलझन से शान्ति की ओर

मेरा जन्म भारत देश में एक हिन्दू परिवार में हुआ था। मैं जाति प्रथा पर दृढ विश्वास रखता था। मैं युवावस्था से मूर्ति पूजा करता । जब मै छोटा लड़का था, मंदिरों में जाकर मूर्तियों के सामने झुकता। सात साल की आयु में, मेरा परिवार केनडा प्रवास कर गये। वहाँ भी मै कुछ समय तक हिन्दू धर्म पर विश्वास कर रहा था। मगर छोटी आयु में ही, परमेश्वर के बारे मे अधिक जानने के लिए मै उत्सुक था। तब किसी ने मुझे मसीही धर्म के बारे में बताया था। मैंने चोरी-छिपे नये नियम (बाइबल) को पढना शुरू किया। मैं नही चाहता था कि मेरे माँ-पिताजी या और कोई यह बात जाने।

उन दिनों में, मुझे यह भय था कि मृत्यु के बाद मेरा क्या होगा? मैं यह सोचता था कि क्या सचमुच स्वर्ग और नरक है? यीशु मसीह वास्तव में है की नही? सच में परमेश्वर है भी या नही?

इस प्रकार एक तरह से, मैं परमेश्वर की खोज कर रहा था। मगर जब मैं सातवी, आठवी और बाद में हाइ-स्कूल पहूँचा, मैं सांसारिक चीजों को खोजने लगा। और शारीरिक पापों ने प्रबल रूप से मुझ पर काबू कर लिया। मैं उस समय चर्च जाने से बहुत डरता था। मैं अश्लील पत्रिकाओं को पढने लगा। मैं लड़कियों के पीछे भाग रहा था। मैं नाच-गाने और चलचित्र देखने लगा। मेरे विचार बहुत ही भ्रष्ट हो गये, क्योंकि मैं कई घंटे टेलिविजन देखता था। तब तक मैं १२ और १३ ग्रेड तक पहूचाँ, मैं एक भी लड़की को अच्छी नजर से भी नही देख पा रहा था। उस समय मैं हस्त मैथुन के पाप का दास बन गया था।

करीब दसवी ग्रेड में, अपने डर पर क ाबू पाकर चर्च जाना शुरू किया। युवकों की सभा, और इतवार की आराधना में भाग लेना शुरू किया। क्योंकि मैं नियमित रूप से चर्च जाता था, वहाँ के लोग मुझे मसीही समझने लगे। यह कहने के लिए मैं आगे वेदी के पास आता था कि मैं मसीह को स्वीकार करता हूँ। जब निर्णय पूछा जाता तो मैं अपना हाथ उठाता था। मैं यह सब कर रहा था। फिर भी मेरी जिन्दगी में कोई परिवर्तन नहीं आया। मेरे अशुद्ध पापों से कोई छुटकारा नहीं था। जब तक मैं सभा में रहता, मुझे लगता था कि परमेश्वर वास्तव में है। जब मैं अकेले घर जाता, मेरा प्रार्थना का जीवन नही था। मैं बहुत ही खालीपन महसूस करता था। मैं यह सोचता था कि मसीही धर्म वास्तविक है कि नही।

हाइस्कूल से बाहर आने के बाद मैं वॉटरलू के विश्वविद्यालय में पढ़ने लगा। मैं वहाँ कंप्यूटर विज्ञान की पढाई कर रहा था। मैंने वहाँ विद्यालय के मैदान में हो रही विशाल मसीही सभाओं में जाना शुरू किया। क्योंकि मैं नियमित रूप से हाजिर होता और बहुत ही उत्साह से भरा था, उन्होंने मुझे बाइबल अध्ययन का नेता बना दिया। मैं दूसरों की अगुवाई करने लगा।

मगर इन सब बातों के बावजूद मैं बहुत ही बेचैन होने लगा। मैं बाइबल की प्रमाणिकता पर ही संन्देह करने लगा। मैंने कई लोगों से विभिन्न धर्मो के बारे में बाते कीं। और वे मुझ से कहने लगे कि उनका धर्म सच्चा धर्म है। मसीही धर्म असत्य है। मैं बहुत ही अनिश्चित था, क्योंकि मुझमें असली परिवर्तन के अनुभव का अभाव था। कई साल चर्च जाने पर भी, किसी ने भी मुझे नही बताया कि मुझे अपने पापों से पश्चताप करने की और उन्हें छोड़ने की आवश्यकता है। परिणाम स्वरूप, जिस रास्ते से मैं परमेश्वर के पीछे जाने की कोशिश कर रहा था, वह बहुत ही असत्य लगने लगा। इसलिए जब यह लोगो ऐसी-वैसी बाते कहने लगे, मैं उन पर विश्वास करने लगा। मैं बाइबल की प्रमाणिकता पर सन्देह करने लगा। मैं परमेश्वर के अस्तित्व पर ही सन्देह करने लगा। इस कारण मैंने अपने मन में यह निश्चय किया कि मैं बाइबल को फ़ेक दूँगा और किसी दूसरे धर्म की ओर फिरूँगा।

इस समय पर, मैं अपनी उलझन में प्रार्थना करने लगा और माँगने लगा कि एक मात्र सच्चा परमेश्वर अपने आप को मुझ पर प्रकट करे - वह परमेश्वर जो मुझे मेरे पापों से मुक्त कर सकता है, वह परमेश्वर जो मुझे जिन्दगी में शान्ति और छुटकारा दे सकता है - वह परमेश्वर जिसके पीछे मैं चलना चाहता हूँ।

सन् १९८१ के गरमी के मौसम में जब मैं यह प्रार्थना कर रहा था, लेमेन्स इवन्जलिकल फेलोशिप के एक भाई से मेरी मुलाकात हुई। उन्होंने मुझे बताया कि यीशु मसीह एक जीवित और बात करने वाला परमेश्वर है। और यह भी कि यीशु मसीह ही एक नौजवान को अपनी जवानी के दिनों में पाप से छुटकारा और विजय दे सकता है। मैं कई मसीही नेताओं के पास, कई नव जवानों की सभा-समारोह में गया था, मगर किसी ने कभी भी मुझे यह नही बताया कि एक नौजवान के लिए पवित्र जीवन जीना संभव है।

जब इस भाई ने इन विषयों के बारे में मुझे बताया, पहले तो मैं उस पर सन्देह करने लगा। क्योंकि वह भारत से आया था। मुझे लगा कि सुसमाचार केनडा से हिन्दुस्तान आना चाहिए। और मुझे उनको सिखाना चाहिए। मैंने अपनी बाइबल-सभा में आने के लिए उसको न्योता दिया ताकि मैं उनको सिखाऊ। मगर जब उन्होने यह सारी बाते मुझे बताई, परमेश्वर के वचन ने मेरे हृदय में कार्य करना शुरू किया। जब मैं उस भाई से मिलकर प्रार्थना करने लगा और वे मुझ से बातें करने लगे, मैं अपने पाप की गहराई को जानने लगा। पहली बार, मैं ने देखा कि मुझे परमेश्वर के सामने पश्चताप करने की जरूरत है।

जब मैं प्रभु की सन्निधी में रहा और उनके वचन बाइबल को पढा, परमेश्वर मुझे गहराई से दोषी सिद्ध करने लगे कि मुझे चुराई हुई चीजों को वापस करना चाहिए। जैसे-जैसे परमेश्वर का आत्मा मुझे दोषी सिद्ध कर रहा था, मैं हर एक कदम पर परमेश्वर की बातें मानने लगा। मैंने अपने माता-पिता के पास जाकर माफ़ी माँगी क्योंकि मैं ने घर से पैसे चुराया था। मैं जिन स्थानों पर काम करता था, उन जगहों पर गया, और पैसा वापस किया, एक पेट्रोल पम्प पर भी। जिन लोगों से मैं झूठ बोलता था, उनके सामने नम्र होकर झूठ को स्वीकार कर लिया था। परमेश्वर ने जिन सारे विषयों को दिखाया था, लोगों के सामने मान कर अपनी अन्तरात्मा को सही किया। और मैंने परमेश्वर के सामने गहराई से अपने आप को

पृष्ठ ४

नकली मसीही लोग

नम्र किया।

तब मसीह का क्रूस मेरे सामने खड़ा हुआ। मैं ने देखा कि प्रभु यीशु मेरे पापों के लिए मरे है। एक अद्‌भुत आनन्द और शान्ति ने मेरी जिन्दगी पर काबू कर लिया। एक नयी सामर्थ्य मेरी जिन्दगी में आयी। परमेश्वर ने मेरे सारे पापों पर मुझे विजय दी। परमेश्वर ने मुझे मेरे विचारों पर विजय देना शुरू किया। परमेश्वर ने मुझ से भजन संहिता (७३:२२-२६) से बात कीं, कि उन्होंने मुझे माफ़ किया। वह इस तरह है: 'तब मैं निर्बुद्धि और नासमझ था, मैं तो तेरे सम्मुख जानवर ही था। फिर भी मैं निरनतर तेरे साथ हूँ; तू ने मेरा दाहिना हाथ थाम लिया है। अपनी सम्मति के द्वारा तू मेरी अगुवाई करेगा, और अन्त में मुझे महिमा में ग्रहण करेगा। स्वर्ग में मेरा और कौन है? तेरे सिवाय मैं पृथ्वी पर और कुछ नहीं चाहता। चाहे मेरा शरीर और मन दोनों हताश हो जाएं, फिर भी परमेश्वर सदा के लिए मेरे हृदय की चट्टान और मेरा भाग है।' जब मैंने इन शब्दों को पढा, मैं सच में आनन्द और स्तुति से भर गया। दस से भी अधिक सालों की शंका और सवाल के बाद पहली बार मुझे मालूम पड़ा कि यीशु मसीह ही परमेश्वर तक पहुंचने के लिए एक मात्र मार्ग है।

इस के बाद परमेश्वर ने मुझे सिखाया कि कैसे प्रार्थना करें। परमेश्वर ने मुझे दिखाया कि मुझे अपने दिन का दसवां भाग प्रार्थना और बाइबल पढने में बिताना चाहिए। उन्होंने यह भी सिखाया कि प्रभु के दिन को पवित्र रखें, उसे शुद्ध करें। सोमवार की सुबह परीक्षा होने पर भी, मैं शनिवार की रात को ही किताबें बन्द कर देता था। जब मैं इन विषयों में परमेश्वर की बातें मान रहा था, एक नया अनुग्रह मुझ में आया। और मेरे विचार इधर-उधर भटकने की बजाय, सप्ताह के बाकी छः दिन मैं अपनी पढाई में ध्यान देने लगा। मुझे आश्चर्य हुआ, जब परमेश्वर ने जिन विषयों की मैं पढ़ाई कर रहा था, उन में से कुछ में पूरी कक्षा में मुझे प्रथम स्थान मिला। इन सब के लिए मैं परमेश्वर की स्तुति करता था। परमेश्वर ने हर एक कदम पर मुझे सिखाना और मेरी अगुवाई करना शुरू किया। उन्होंने अपने जनों की संगति के द्वारा भी मुझे दृढ़ बनाया।

- विनय देशपांडे

क्लिफ रॉबिनसन जो एक डॉक्टर मिशनरि था, बहुत साल पहले कलकत्ता में सेवा कर रहा था। उन्होंने यह निम्न लिखित दुःख भरी कहानी का वर्णन किया।

एक दिन, कलकत्ता की गलियों में कानून और व्यवस्था पूरी तरह से अस्तव्यस्त हो गई थी। क्लिफ जहाँ रह रहा था, शहर के उस क्षेत्र में ज्यादातर हिन्दू रहते थे।

मुस्लिम नवजवानों का एक बहुत बड़े दल ने एक तरह की उग्र क्रान्तिकारी सेना का गठन किया। और उन्होंने उस क्षेत्र को अपने काबू में कर लिया। क्लिफ

और उनकी पत्नी, बेट्टी अपने तीसरी मंजिल के अपार्टमेन्ट से उस भीड़ को गली से आते देख रहे थे। वह क्रोधित मुसलमान घर घर जा रहे थे। और लोगों को बाहर निकाल कर पीट रहे थे। बहुधा उनको निर्दयता से मार रहे थे।

अचानक वे एक गली में आये जहाँ मसीही लोगों का एक समूह रह रहा था। वे चार मसीही परिवार थे, जो आसपास के चार छोटे-छोटे अपार्टमन्ट में रह रहें थे। वे क्लिफ के निजी दोस्त थे। उन दिनों में, मसीही लोग अपने घरों पर या गाडियों पर या दरवाजों पर एक बहुत बड़ा लाल रंग के क्रूस का चित्रण करते थे। यह सब को बताने के लिए, 'हमें इस सब में शामिल मत करों, हम हिन्दू नहीं हैं, हम मुसलमान नहीं हैं, हमें छोड़ दो।' और इसलिए इन चार मसीही परिवारों के घरों के सामने वाले दरवाजों पर बड़ा लाल क्रूस का चित्रण किए हुए थे।

जब वह मोहम्मदीय नवजवान उस गली से गुज़र रहे थे, वह उस पहले दरवाजे पर रुके जिस पर लाल क्रूस का निशान था। क्या बातें हो रही हैं, क्लिफ उन्हें सुन नही पा रहा था क्योंकि बहुत ज्यादा शोर था। मगर वह उन्हें एक दूसरे से बातें करते देख रहा था। वे दूसरे अपार्टमेन्ट पर पहुँचे और आखिर उस दरवाजे से आगे बढ गये। मगर तीसरे दरवाजे पर, उस नवजवानों के समूह में सचमुच ही एक बहस होती दिखाई दी।

अचानक उनके एक नेता ने, लाल क्रूस का निशान होने के बावजूद दरवाजे को धक्का देकर घर के अन्दर घुस गया। चींखते-चिल्लाते उस घर के लोगों को बाहर खींच लाये। आदमी, औरत और बच्चों की वहीं सड़क पर खुल्लेआम अपनी तलवारों से हत्या कर दी। क्लिफ यह सब समझ नहीं पाए। पहला दरवाजा जिस पर क्रूस था, वह ठीक था। दूसरा दरवाजा ठीक था। और चौथा दरवाजा भी ठीक था। उस तीसरे दरवाजे में ऐसा क्या अन्तर था? उस पर भी वही क्रूस का निशान था। मगर उस घर के लोग मारे गये।

जब कानून और व्यवस्था फिर नियंत्रण में आयी, क्लिफ ने जाँच-पड़ताल करनी शुरू की। उनको यह मालूम पड़ा कि उस तीसरे घर में रहने वाले लोग पेशे से बढई थे। मसीही होते हुए भी वे हिन्दू मूर्तियों को बनाकर बाज़ार मे उनकी बिक्री किया करते थे, ताकि उनको और थोड़ा पैसा मिल जाए। उन उग्र एकेश्वरवाद मुस्लिम लोग, जहां कहीं अगर कोई मूर्ति दिखे, तो वही उस पर थूकते थे। जब उन लोगों ने सुना कि मसीही कहलाने वाले ये लोग हिन्दुओं की मूर्तियाँ बनाते थे, उन लोगों ने कहा 'ये लोग मसीही नहीं है। उनका धार्मिक विश्वास क्या है, उसकी हमें कोई परवाह नहीं है। उनके घर मे मूर्तियाँ हैं। और वे मृत्यु दण्ड के पात्र है।' इसलिए सारा घर परिवार नष्ट कर दिया गया।

यह एक दुःख भरी कहानी है। मगर हम में से कई लोगों की जिन्दगी में यह दिखता है। हमारे दरवाजों पर क्रूस है। हम यह दावा करते है कि सच्चा और जीवित परमेश्वर हमारी जिन्दगियों पर शासन कर रहा है। मगर हम ने एक मूर्ति को अपने लिए पहला स्थान लेने की अनुमति दी है। जैसे दूसरी आज्ञा कहती है- किसी चीज़ की मूर्ति बना कर हमें नही पूजनी चाहिए। चाहे वह कितनी ही अचछी क्यों न हो। किसी इस्तेमाल में आने वाली चीज़ की आराधना या पूजा करना और जिसकी पूजा करते हैं उसका इस्तेमाल करना - यही मूर्ति पूजा है।

क्या तुम्हारे हृदय मे कोई मूर्ति है? क्या मसीह तुम्हारे हृदय मे झांककर देखे और कहे, 'तुम्हारे पूरे व्यक्तित्व पर मेरा दावे का एक और प्रतिद्वन्द्वी है। तुम पूरी तरह से मेरा नही हो'?

'छोटे बच्चों, मूर्तियों से सावधान रहो।' तुम्हारा प्रभु परमेश्वर एक ईर्ष्यालु परमेश्वर है जो किसी प्रतिद्वन्द्वी को बरदाश्त नही करेगा।

- चुनीहुई

कृपया पढ़ने के पश्चात मित्रों को दीजिए।